

इस्लामी तन्त्रशास्त्र

محمد التان

SHAIKH ABDUL GAFAR
MAJHIKHANDA, NIALI
ODISHA, INDIA

issuu.com/abdu123/niali/odisha



पं. राजेश दीक्षित
असगर अली

[illegible]

- (१३) नीचे दिये गये कठे भाषा 'काष्ठ' का भाग
 (१४) विद्याभट्ट का 'राष्ट्र' का भाग
 (१५) सर्वप्रधान-मन्त्र 'मोक्ष' का भाग
 (१६) लोकहित-मन्त्र 'नीति' का भाग
 (१७) लोक विद्यालयक एवं दण्ड उल्लासक
 'दण्ड' का भाग
 (१८) सर्वप्रधान-मन्त्र काटक 'राष्ट्र' का भाग
 (१९) सर्वप्रधान-मन्त्र काटक 'दण्ड' का भाग
 (२०) विद्वत्-सम्प्रदाय काटक 'दण्ड' का भाग
३. कुपल, दिन और रात्रिपरा के भाग
- (१) कुपल के भाग
 (२) दिन के भाग
 (३) रात्रिपरा का भाग, दण्ड
४. बीजा और फल के भाग

- (१) फल की विभागें
 (२) बीजा के दो भागें, फल
 (३) फल की बीजा के भाग
 (४) बीजा के भाग
 (५) बीजा के भाग
 (६) बीजा के भाग
 (७) बीजा के भाग
 (८) बीजा के भाग
 (९) बीजा के भाग
 (१०) बीजा के भाग
 (११) बीजा के भाग
 (१२) बीजा के भाग
 (१३) बीजा के भाग
 (१४) बीजा के भाग
 (१५) बीजा के भाग
 (१६) बीजा के भाग
 (१७) बीजा के भाग
 (१८) बीजा के भाग
 (१९) बीजा के भाग
 (२०) बीजा के भाग

३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

INSTITUTIONAL LIBRARY

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

एक दृष्टि में

100% WATER-PROOF

[illegible]

मन्य बह्मणाये का मान है ।

● **उत्तर कः** विद्यालय प्रायोगे पाठ्यक्रम अनुसार कीर्तनात्मक उत्तर देना बीजाभ्यासदा प्रमाण है।

● आधुनिक विज्ञान और सन्तों में बहुत समानता देखे हुए थी। सन्तों में न्यायियत है, शास है और कल्याण है।

● छत्र विधान का भाष्योपार्थक्य और विधियों का सार्वभौमिक मान सामान्य को सुखाने बनाकर सिद्धि तक पहुँचता है ।

● लोक-कल्याण और मानव-कल्याण की कामना में किसे लक्ष्य मान्यता प्राप्त है वह लोक और परलोक दोनों में मान्यतायी होते हैं।

● आर्यो का शरीर भार्य गति-प्रकृति एवं रजसात् है। इन आर्यों के जीवन-प्रयोग मात्रको भ्रष्टी से बचाने में सहायक होना।

● दूसरा गुणक भी विल गवने मिलता, साथ साथी-सीतम्, झांझा-सीतम्, झुलुल-सीतम् गुणकवां ये लालचिल मिले गवने हैं। सिर्फे दुहाई सा-सीतम्, ठान्ठ को गुणक में लालचिल दिया गया है। मिलकी धारणा मिली-बार है।

[illegible]

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

यस समय पूरा हो जाने पर निम्नलिखित काव्य का ११ बार जपना-
एक बार वाच्य—

“या दयाकील वरकक या अधिक या बलता हो हूँ ये वर
और दीला दे वा सुपुत्र ।”

हरने बाद में ‘अलिङ्ग’ बहार को लगाने के १००० छोटे छोटे टुकड़ों
पर धारती-मिट्टि में निबद्ध, उन कारण के टुकड़ों की आठ की गणितियों
में बरकर, किसी दिकार (गरी) में बहार, ऐसा करने से काव्य निर हो
जाता है ।

यह ‘अलिङ्ग’ का भाव अलग-अलग प्रभावकारी है । यदि कृत्रिम रीति
से लागू किया जाए तो काव्य की मनोकायना को बरकर पूरा करना है
तब पर से मन-काय की वृद्धि करता है ।

‘अलिङ्ग’ में लेकर ‘ये’ तक लगी धारती बहारों को धारती मिट्टि
में निबद्ध की निम्न निम्न प्रकार दी गई है—

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

(धारती बहारों की विधि)

किस से रोनी देते बाला

‘ये’ का प्रपञ्च

य’ का अल-लाभन है व से रोनी बालि (आर्कितिक बल-लाभ) से
किया जाता है । धारती मिट्टि आर्कितिक है—

✓ मने हुए मनुष्य को छोड़ने वाला

‘सो’ का मंत्र

‘सो’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या सदाहीनं सदाकृत् या मे या सखिषो ।”

विधि - (१) इस मन्त्र को भाभी रात्र के समय किसी एकत्र स्थान में जाकर के नीचे उठे होकर १००० की संख्या में करने ठहर का मन्त्रिक बर से करना गया हो। उसके उपरान्त से साक्षात् की ओर डूँक करने की कृपा या गुला खसिद मोम पर कीट जाना है।

(२) ‘सो’ को धारती मण्डप में ५०० की संख्या में लिखकर वक्रिका के नीचे एक कर धारि तथा उसके मन्त्र का १००० की संख्या में कर करने से काल (सन्तान) में मने हुए मनुष्य के बारे में सारा हीन-मान माह्व हो जाता है।

(३) यदि ‘सो’ के मन्त्र में ‘वा’ लको संख्या और कृपा किया जान तो साक्षि ह्रास साक्षि होना है।

इसके बाद का ‘विहीनसो’ और ‘सदा’ पहले का नियम पूर्ववत् करना।

यानुनायक तथा सनन्दि सारक

‘दास’ का मंत्र

‘दास’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या ददाहीनं सदाकृत् या दास या दीपानो ।”

विधि - (१) सुदीर्घ से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पहले से करा की पूँट सेना है। कर-दीर्घ के लिए इस मन्त्र का प्रतिनिध कर करने रहता साधक है।

(२) सुदीर्घ से पहले इस मन्त्र को १० बार पर कर मन्त्र के पर की ओर पूँट को मने से उतार जाना हो जाना है। यह किया १० दिनों तक नियम निर्धारित रूप से करना चाहिए।

इसके बाद का ‘विहीनसो’ और ‘सदा’ पहले का नियम पूर्ववत् करना है।

मन्त्रिका को कृपा यति, सनन्दि ज्ञान

सहीकर के लिए मनुष्य होने वाला

‘दास’ का मन्त्र

‘दास’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या ददाहीनं सदाकृत् या दास या दीपानो ।”

विधि - (१) सुदीर्घ से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पहले से करा की पूँट सेना है। कर-दीर्घ के लिए इस मन्त्र का प्रतिनिध कर करने रहता साधक है।

(२) सुदीर्घ से पहले इस मन्त्र को १० बार पर कर मन्त्र के पर की ओर पूँट को मने से उतार जाना हो जाना है। यह किया १० दिनों तक नियम निर्धारित रूप से करना चाहिए।

इसके बाद का ‘विहीनसो’ और ‘सदा’ पहले का नियम पूर्ववत् करना है।

यानुनायक तथा सनन्दि सारक

‘दास’ का मन्त्र

‘दास’ का मन्त्र इस प्रकार है -

“या ददाहीनं सदाकृत् या दास या दीपानो ।”

विधि - (१) सुदीर्घ से पहले इस मन्त्र को १००० की संख्या में पहले से करा की पूँट सेना है। कर-दीर्घ के लिए इस मन्त्र का प्रतिनिध कर करने रहता साधक है।

(२) सुदीर्घ से पहले इस मन्त्र को १० बार पर कर मन्त्र के पर की ओर पूँट को मने से उतार जाना हो जाना है। यह किया १० दिनों तक नियम निर्धारित रूप से करना चाहिए।

(३) एक क्षण के उपर काटती निधि में ८०० की संख्या में २५ लाख मिलकर, जब क्षण के भीतर अपने काम में रहे। एक बही बाढ़ जुड़े काम में निरानाकर सभी की बानी अन्धकादिवाद रकती में रककर ऊपर से हवावी नोचने दिखाने कि किसी बखार तक आये, ठण्डापाव रानी के संभव पूर्व ८०। बाद मन्त्र पढ़कर ही बही बही पन्ना में सहे हुए बने से लान के दिखने में आने लो आरम्भ।

एक सन के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का निर्देश www.abhinavbharati.com/abhinavbharati.com पर सज्जनता चाहिए।

'न' का मन्त्र दस प्रकार है—

शुद्ध-अथ-नारायण

'न' का मन्त्र

"या सत्काइल बरकर या मे वा जाकिनी।"

निधि इस मन्त्र का १ मन्त्र एक मिल ५०० की संख्या में कर करके पढ़ने से शत्रु का धन दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का नियम सुबह का प्रयोग चाहिए।

शुद्ध-अथ-नारायण

'नी' का मन्त्र

'नी' का मन्त्र दस प्रकार है—

६२८

"या सुसुकोल बरकर या नीन या समीचीने।"

निधि - इस मन्त्र को 'वैष्णव' में २ बजे के समय ७ बार करने से दुष्टियां शत्रुधन गाने लगती हैं।

इस मन्त्र के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का नियम पूर्वोक्त संवत्सरा चाहिए।

शुद्ध-अथ-नारायण एवं सन्तान प्रदायक

'नीन' का मन्त्र

"या सुसुकोल बरकर या नीन या समीचीने।"

'नीन' का मन्त्र दस प्रकार है—

"या सुसुकोल बरकर या नीन या समीचीने।"

(३) एक क्षण के उपर काटती निधि में ८०० की संख्या में २५ लाख मिलकर, जब क्षण के भीतर अपने काम में रहे। एक बही बाढ़ जुड़े काम में निरानाकर सभी की बानी अन्धकादिवाद रकती में रककर ऊपर से हवावी नोचने दिखाने कि किसी बखार तक आये, ठण्डापाव रानी के संभव पूर्व ८०। बाद मन्त्र पढ़कर ही बही बही पन्ना में सहे हुए बने से लान के दिखने में आने लो आरम्भ।

एक सन के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का निर्देश www.abhinavbharati.com/abhinavbharati.com पर सज्जनता चाहिए।

शुद्ध-अथ-नारायण

'न' का मन्त्र

"या सत्काइल बरकर या मे वा जाकिनी।"

निधि इस मन्त्र का १ मन्त्र एक मिल ५०० की संख्या में कर करके पढ़ने से शत्रु का धन दूर हो जाता है।

इस मन्त्र के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का नियम सुबह का प्रयोग चाहिए।

शुद्ध-अथ-नारायण

'नी' का मन्त्र

"या सुसुकोल बरकर या नीन या समीचीने।"

निधि - इस मन्त्र को 'वैष्णव' में २ बजे के समय ७ बार करने से दुष्टियां शत्रुधन गाने लगती हैं।

इस मन्त्र के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का नियम पूर्वोक्त संवत्सरा चाहिए।

शुद्ध-अथ-नारायण

'नीन' का मन्त्र

"या सुसुकोल बरकर या नीन या समीचीने।"

निधि - इस मन्त्र को 'वैष्णव' में २ बजे के समय ७ बार करने से दुष्टियां शत्रुधन गाने लगती हैं।

इस मन्त्र के साथ 'विमलनाथ' तथा 'बक' पढ़ने का नियम पूर्वोक्त संवत्सरा चाहिए।

वर्गीकरण के अनुसार एवं कार्य-संगतक

‘नोय’ का मन्त्र

‘सिंह’ का यह वृत्त प्रचलित है—

“या इत्यर्थात् सत्यक या ज्ञेय या तादृशो ।”

विष्णु- (१) कृष्ण काव्य को निम्न प्रकार से पूर्यो व
 कारणी निमित्त से साधन-साधन, 'जीव' आदि निमित्त, उन्हे सादे की गो-
 से साधन-साधन कर दे। फिर उल्लेख की उतर प्रतीति प्रतीति की उ-
 मार प्रतीति पूर्यो साधन साधन से साधन की प्रतीति की प्रतीति
 (प्रतीति) से साधन से साधन से साधन से साधन से साधन से
 साधन से ।

2) खासकर एक एक भाग के ऊपर 200 की संख्या में

“या पुनर्माणा कलान्ता कल्य मन्ता मन्तक वा
तोय वा गर्दिभो ।”

[illegible][illegible]

“महोदय, मैं आपका ‘विश्रामस्थान’ बना लेना चाहती हूँ। मैं आपकी सेवा में हूँ।”

‘जोय’ का सङ्घ

“या लोकादल मरुत या मोष या आदिरो ।

विषय प्रतिष्ठित भाषाशास्त्रज्ञों की सेवाओं के दिनों तक देश-भर को जगने वाले डॉ. शर्मा का समय और होना है।

新編 外山集	三冊	1982	1982	1982
新編 外山集	三冊	1982	1982	1982
新編 外山集	三冊	1982	1982	1982

$$h_1, h_2, \dots, h_n \in \mathbb{R}^n, \quad h_1 + h_2 + \dots + h_n = 0, \quad h_1 + h_2 + \dots + h_n = 0$$

90179-700 501795

1101 第1 輯

॥ कर्म वा तेन वा अग्नीनां । ॥

[illegible]

1994年11月

१. कक या भेन या शुक्रतो ।

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

॥ १ ॥

महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री जे. ए. शर्मा जी ने १००० रुपये के नोटों के निर्माण को आगे बढ़ाया है। नया नोटों का निर्माण एवं उत्पादन करना होगा। इस निर्माण कार्य में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री जे. ए. शर्मा जी ने १००० रुपये के नोटों के निर्माण को आगे बढ़ाया है।

सूक्त विरादायक एवं सधन में उपरादायक

‘नून’ का सन्ध

‘नून’ का सन्ध बनाना है -

“वा लोलादौल वा नून वा दौ”

निधि—(१) तुलनाएँ बनाना दृष्टान्तिवाद की दृष्टि को नज़रअंदाज़ करने पर वह कर की बातों में दृष्टिकोण बनाना उचित स्थान में मिलाना है।

(२) यदि ५० मिली सेक मिलान १००० की संख्या में हल मान लाना किया जाता तो बहुत दिवा मान होगी है।

दल मान के साथ ‘विनिर्वाह’ एवं ‘वकद’ पढ़ने का नियम प्रत्यक्ष है।

संक्षेपपूर्ण प्रकार

‘वाव’ का सन्ध

‘वाव’ का सन्ध बनाना है -

“वा रकतावालि वदक वा वाव वा वदौ”

निधि—दल मान की पढ़ने हुए कड़ी की बातों में अनुरोध प्राप्त होगा है। यह मान रखना चाहिए कि पढ़ने के कोई दो-दो-क न हों। यदि कोई दो-दो-क तो उसके लाने ७० बार मान वकद चूकें बार इसी बाधित, अनुप्रास मान बनाना चाहिए।

दल मान के प्रकार रखना किसी मनोरंज की लेकर माना करने के उसके प्रति होगी है।

दल मान के साथ ‘विनिर्वाह’ एवं ‘वकद’ पढ़ने का नियम प्रत्यक्ष है।

सूत्रवत् है।

सकल-सुखा प्रकार

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध बनाना है -

“वा दीर्घादौल वदक वा है वा वदौ”

निधि—ईट के ऊपर फोरनी मिलान ७० बार ‘है’ मिल कर पढ़ना उसके ऊपर प्रतीक मान ‘वा दीर्घादौल’ की ७० पढ़कर उक्त ईट को बीच में बांध दें, तो यह सकल वदौ तक सुनिश्चित बना रहेगा, पढ़ना-पढ़ना नहीं।

है के साथ वा व दीर्घादौल पर ‘है’ अगर मिलकर, उन्हें ही मिलाना है।

‘है’ का सन्ध बनाना है -

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध बनाना है -

“वा दीर्घादौल वदक वा है वा वदौ”

निधि—दल मान की पढ़ने हुए कड़ी की बातों में अनुरोध प्राप्त होगा है। यह मान रखना चाहिए कि पढ़ने के कोई दो-दो-क न हों। यदि कोई दो-दो-क तो उसके लाने ७० बार मान वकद चूकें बार इसी बाधित, अनुप्रास मान बनाना चाहिए।

दल मान के प्रकार रखना किसी मनोरंज की लेकर माना करने के उसके प्रति होगी है।

दल मान के साथ ‘विनिर्वाह’ एवं ‘वकद’ पढ़ने का नियम प्रत्यक्ष है।

सूत्रवत् है।

सकल-सुखा प्रकार

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

‘है’ का सन्ध

२ कुफल, दिन और हाजिरात के मन्त्र

‘不牙牙’ 不 牙 牙

एकमात्र सत्य है। इन सुखों का अन्तः-संगत साधक को साधन करने से विभिन्न मनोकायनाओं की पूर्ति होती है। सुखों के माध्यमतात्पर्य है—

पहला मुद्रण

[illegible]

陈永贵 1944年

“विश्वाम्भवादिरेवमार्ते ह्यम विभिन्नान् ज्ञातेकित्वा अतोऽपि
मिलनार्थे श्रमेण कर्मिणोर्लोही द्वावहन् वा दूतान् कथाद्वयम् अतोऽपि
पितृदत्तमेका या अवदन्तदिदमेव”

श्रीगुरुभ्यो नमः

“वर्धमानस्य हिरण्यपात्रिर्ब्रह्मण
विभियमन्तुर्दिनमाभीष्टस्य ज्ञात्वा
भिरुत्तरोत्तरोत्तमा कृमिभ्योऽपि क्षुधयन्
पुरुषस्यमीदृशकटीगो विरह
मनोकाया अरहमनोर्दिधीनः ।”

सौदा कुपला

“वामनस्तार्क्ष्यं चानन्दो म विमलस्तार्वक इति
विज्ञात्वा तैस्त्रयोभिर्गुणैश्च दूरतः प्रणीयते कर्मिणः
तं वा अवस्थादिवीम ।”

विभिन्नता विस्मयीकरा आति-
 वाचाला विमल-
 भावना अथवा न कष्टान्तरा विमल-
 भावना

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ।

31

[illegible]

ना बाबा के कृत-सिद्धार आदि के विषय

[illegible]

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

गुरु ब्रह्मा लोकेश्वर से मान गया है। तब

THE UNIVERSITY OF CHICAGO

संस्कृत-भाषा-विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

1. 1990年1月1日至1990年12月31日

१। श्री श्री दादाशरण (समस्त-अपिण्ड) कनयोर हूँ

मासवाला सीन हो जाओ है तथा बिधा कठोर

विनी
आदमी को फिरगी जागी हो लखवा राजाजवन क

वे लक्ष्य प्राप्त करने का योग्य व्यक्ति हैं।

1
 2
 3
 4
 5
 6
 7
 8
 9
 10
 11
 12
 13
 14
 15
 16
 17
 18
 19
 20
 21
 22
 23
 24
 25
 26
 27
 28
 29
 30
 31
 32
 33
 34
 35
 36
 37
 38
 39
 40
 41
 42
 43
 44
 45
 46
 47
 48
 49
 50
 51
 52
 53
 54
 55
 56
 57
 58
 59
 60
 61
 62
 63
 64
 65
 66
 67
 68
 69
 70
 71
 72
 73
 74
 75
 76
 77
 78
 79
 80
 81
 82
 83
 84
 85
 86
 87
 88
 89
 90
 91
 92
 93
 94
 95
 96
 97
 98
 99
 100
 101
 102
 103
 104
 105
 106
 107
 108
 109
 110
 111
 112
 113
 114
 115
 116
 117
 118
 119
 120
 121
 122
 123
 124
 125
 126
 127
 128
 129
 130
 131
 132
 133
 134
 135
 136
 137
 138
 139
 140
 141
 142
 143
 144
 145
 146
 147
 148
 149
 150
 151
 152
 153
 154
 155
 156
 157
 158
 159
 160
 161
 162
 163
 164
 165
 166
 167
 168
 169
 170
 171
 172
 173
 174
 175
 176
 177
 178
 179
 180
 181
 182
 183
 184
 185
 186
 187
 188
 189
 190
 191
 192
 193
 194
 195
 196
 197
 198
 199
 200
 201
 202
 203
 204
 205
 206
 207
 208
 209
 210
 211
 212
 213
 214
 215
 216
 217
 218
 219
 220
 221
 222
 223
 224
 225
 226
 227
 228
 229
 230
 231
 232
 233
 234
 235
 236
 237
 238
 239
 240
 241
 242
 243
 244
 245
 246
 247
 248
 249
 250
 251
 252
 253
 254
 255
 256
 257
 258
 259
 260
 261
 262
 263
 264
 265
 266
 267
 268
 269
 270
 271
 272
 273
 274
 275
 276
 277
 278
 279
 280
 281
 282
 283
 284
 285
 286
 287
 288
 289
 290
 291
 292
 293
 294
 295
 296
 297
 298
 299
 300
 301
 302
 303
 304
 305
 306
 307
 308
 309
 310
 311
 312
 313
 314
 315
 316
 317
 318
 319
 320
 321
 322
 323
 324
 325
 326
 327
 328
 329
 330
 331
 332
 333
 334
 335
 336
 337
 338
 339
 340
 341
 342
 343
 344
 345
 346
 347
 348
 349
 350
 351
 352
 353
 354
 355
 356
 357
 358
 359
 360
 361
 362
 363
 364
 365
 366
 367
 368
 369
 370
 371
 372
 373
 374
 375
 376
 377
 378
 379
 380
 381
 382
 383
 384
 385
 386
 387
 388
 389
 390
 391
 392
 393
 394
 395
 396
 397
 398
 399
 400
 401
 402
 403
 404
 405
 406
 407
 408
 409
 410
 411
 412
 413
 414
 415
 416
 417
 418
 419
 420
 421
 422
 423
 424
 425
 426
 427
 428
 429
 430
 431
 432
 433
 434
 435
 436
 437
 438
 439
 440
 441
 442
 443
 444
 445
 446
 447
 448
 449
 450
 451
 452
 453
 454
 455
 456
 457
 458
 459
 460
 461
 462
 463
 464
 465
 466
 467
 468
 469
 470
 471
 472
 473
 474
 475
 476
 477
 478
 479
 480
 481
 482
 483
 484
 485
 486
 487
 488
 489
 490
 491
 492
 493
 494
 495
 496
 497
 498
 499
 500
 501
 502
 503
 504
 505
 506
 507
 508
 509
 510
 511
 512
 513
 514
 515
 516
 517
 518
 519
 520
 521
 522
 523
 524
 525

100

काल को देखकर उसका कूल, इस लुभा मिठाई से पुनः भर। यह हीनक
लकड़ों के पट्टे पर लैरी काया या बालक की दृष्टि के एकदम सामने
रहता था।

1	1	0	-
2	2	5	2
0	0	7	7
2	2	5	2
0	0	0	0

23

[illegible]

100

ESL.UU.com/abbouly30Mail/Odisha

८ ऋषी बीसा यन्त्र

ग्रीष्म ऋतु में बीसा यन्त्र की रचना के समय सौर ऋतु के ऋषी के अक्षर अक्षरानुसार बीसा में लिखते रहते थे यन्त्र की सज्जदता निकल आती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—

८	३	१०
८	७	४
३	११	६

२८

८	३	१०
९	७	४
३	११	६

२९

यन्त्र की रचना से सदा सर्वप्रथम ग्रीष्म ऋतु के ऋषी के अक्षरानुसार बीसा में लिखते रहते थे यन्त्र की सज्जदता निकल आती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—

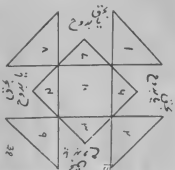
ग्रीष्म ऋतु की रचना की पूर्वी देकर सदा एक बार पूर्वी ऋतु के ऋषी के अक्षरानुसार बीसा में लिखते रहते थे यन्त्र की सज्जदता निकल आती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—

यन्त्र की रचना से सदा सर्वप्रथम ग्रीष्म ऋतु के ऋषी के अक्षरानुसार बीसा में लिखते रहते थे यन्त्र की सज्जदता निकल आती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—

issuu.com/abdu23/magazine/griishma_yantra

यन्त्र की रचना से सदा सर्वप्रथम ग्रीष्म ऋतु के ऋषी के अक्षरानुसार बीसा में लिखते रहते थे यन्त्र की सज्जदता निकल आती है। यन्त्र का स्वरूप यह है—





६. शुद्धि कथन (२)



शुद्धि कथन (२) ३८

issuu.com/abdu23/mia/wednesday



३३

शुद्धि कथन

शुद्धि कथन (२) ३९

शुद्धि कथन (२) ३९

१	२	३	४	५
६	७	८	९	१०
११	१२	१३	१४	१५

शुद्धि कथन (२) ३९

५-अस के चाली का दण्ड, दुरहाल और भूमिगत-एक लकड़ी जिसमें दण्ड केस की कलम में २००० की संख्या के दण्ड किसी एकान्त तथा भूत स्थान में दंडकर पृथकी पुर मिळाने से मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

६-आस के चाली के दण्ड के आस के चाली पर ही ५०० की संख्या से दण्ड मिळकर नीचर (बहुल) के गुण में दण्ड देते हैं दण्ड जेते प्रकल लण्ड की की जतर तथा देहपुल का निकलर बनाना अपना है ।

७-हूली की चाली में विचलर, बलक द्वारा पण्डर के ऊँडे (Pundarika) दण्ड विचलर, उने दण्डन के पुर की बोल्ट के नीचे गाद देते हैं, बलकी अपने देते, यदि सदीवी आदि के कण्ड देते बनाने हैं ।

८-अपानाएँ (अंगिर, चिरिटा या अनागाएँ) के दण्ड के बोलबल के जतर बाहू बलब निज भर उपा-दीपी के बने में बांध देते हैं विचरती, नीचरा बाहू दुर जतर के चाली के जतर दूर हो जाती हैं ।

९-बोहर के दण्ड के बोलबल भर दण्ड-अस की निजलर उपा दण्ड दुरल पुर दण्ड करने से नापकाने में दिखल होती है ।

१०-एकल के दण्ड की बरा नाथ दीनिली (अपार करके उलू अलन-अपार आटे की मनीषिता में बल करे लण्ड मनीषिता की मनीषिता की आने के निज चाली में दण्ड दे हो करने मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

११-अस के चाली पर उपाद दिनी लण्ड निज १००० की-संख्या में दण्ड दण्ड की निज तथा दण्ड के नीचे गाद का नाथ निजलर उपा दण्ड-निजलर चाली की बांध में बना दे हो लण्ड का बांध हो बना है ।

अन्य नियम

१-काले निज के निज दण्ड के नाथ की निजले लण्ड उपाद दिना की जतर दूर करने केठरा चालिा तथा अवार की कलम से निजला चालिए ।

२-लण्ड की भर दण्डाएँ लण्ड, गाल-कर्म के निज दण्ड के दण्ड की निजले लण्ड चालिा दिना की जतर दूर करके बंदना चालिए तथा नीचे की कलम से निजला चालिा । दण्ड की १०६ बार निजलर दिनाया चालिए तथा दे ही लण्ड का लण्ड बनाया चालिा ।

३-एक-आदि के निज निजलर हो तो वही लण्ड करके गुणल दण्ड में किसी उपाद निज से दण्ड की निजला आरपन करना चालिए ।

४-अन्य काल के निज निजला हो तो गुणल दण्ड में दण्डा बाधुल निज में बंध की निजला आरपन करना चालिए ।

५-दण्ड के दण्ड का लण्ड करने लण्ड उपाद में दण्डा चालिए एवं केवल भूत का दण्ड तथा दण्ड का नीचलर करना चालिए ।

६-अस के चाली का दण्ड, दुरहाल और भूमिगत-एक लकड़ी जिसमें दण्ड केस की कलम में २००० की संख्या के दण्ड किसी एकान्त तथा भूत स्थान में दंडकर पृथकी पुर मिळाने से मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

यन्त्र संस्कार संस्कार

१-अस के चाली का दण्ड, दुरहाल और भूमिगत-एक लकड़ी जिसमें दण्ड केस की कलम में २००० की संख्या के दण्ड किसी एकान्त तथा भूत स्थान में दंडकर पृथकी पुर मिळाने से मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

२-लण्ड की भर दण्डाएँ लण्ड, गाल-कर्म के निज दण्ड के दण्ड की निजले लण्ड चालिा दिना की जतर दूर करके बंदना चालिए तथा नीचे की कलम से निजला चालिा ।

३-एक-आदि के निज निजलर हो तो वही लण्ड करके गुणल दण्ड में किसी उपाद निज से दण्ड की निजला आरपन करना चालिए ।

४-अन्य काल के निज निजला हो तो गुणल दण्ड में दण्डा बाधुल निज में बंध की निजला आरपन करना चालिए ।

५-दण्ड के दण्ड का लण्ड करने लण्ड उपाद में दण्डा चालिए एवं केवल भूत का दण्ड तथा दण्ड का नीचलर करना चालिए ।

६-अस के चाली का दण्ड, दुरहाल और भूमिगत-एक लकड़ी जिसमें दण्ड केस की कलम में २००० की संख्या के दण्ड किसी एकान्त तथा भूत स्थान में दंडकर पृथकी पुर मिळाने से मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

७-लण्ड की भर दण्डाएँ लण्ड, गाल-कर्म के निज दण्ड के दण्ड की निजले लण्ड चालिा दिना की जतर दूर करके बंदना चालिए तथा नीचे की कलम से निजला चालिा ।

८-एक-आदि के निज निजलर हो तो वही लण्ड करके गुणल दण्ड में किसी उपाद निज से दण्ड की निजला आरपन करना चालिए ।

९-अन्य काल के निज निजला हो तो गुणल दण्ड में दण्डा बाधुल निज में बंध की निजला आरपन करना चालिए ।

१०-दण्ड के दण्ड का लण्ड करने लण्ड उपाद में दण्डा चालिए एवं केवल भूत का दण्ड तथा दण्ड का नीचलर करना चालिए ।

११-अस के चाली का दण्ड, दुरहाल और भूमिगत-एक लकड़ी जिसमें दण्ड केस की कलम में २००० की संख्या के दण्ड किसी एकान्त तथा भूत स्थान में दंडकर पृथकी पुर मिळाने से मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

१२-लण्ड की भर दण्डाएँ लण्ड, गाल-कर्म के निज दण्ड के दण्ड की निजले लण्ड चालिा दिना की जतर दूर करके बंदना चालिए तथा नीचे की कलम से निजला चालिा ।

१३-एक-आदि के निज निजलर हो तो वही लण्ड करके गुणल दण्ड में किसी उपाद निज से दण्ड की निजला आरपन करना चालिए ।

१४-अन्य काल के निज निजला हो तो गुणल दण्ड में दण्डा बाधुल निज में बंध की निजला आरपन करना चालिए ।

१५-दण्ड के दण्ड का लण्ड करने लण्ड उपाद में दण्डा चालिए एवं केवल भूत का दण्ड तथा दण्ड का नीचलर करना चालिए ।

१६-अस के चाली का दण्ड, दुरहाल और भूमिगत-एक लकड़ी जिसमें दण्ड केस की कलम में २००० की संख्या के दण्ड किसी एकान्त तथा भूत स्थान में दंडकर पृथकी पुर मिळाने से मनीषितानाएँ पूर्व होती हैं ।

१७-लण्ड की भर दण्डाएँ लण्ड, गाल-कर्म के निज दण्ड के दण्ड की निजले लण्ड चालिा दिना की जतर दूर करके बंदना चालिए तथा नीचे की कलम से निजला चालिा ।

१८-एक-आदि के निज निजलर हो तो वही लण्ड करके गुणल दण्ड में किसी उपाद निज से दण्ड की निजला आरपन करना चालिए ।

विधि 'राज' के सबसे नीचे का चौका लगाकर मुकुटधर, कपड, माला तथा नैवेद्य चक्राकर, जला भरे सोहरे बोरा का धोम लगाकर, देव मान को १०८ बार जप करके दो चिह्न हो जाता है ।

जब किसी काम की मिट्ट करती हो, उस समय दल मान्य को चक्राकर उसके को समस्त घर तक ले जाने मिट्ट होना है । दल मान्य में भूत-देवता यदि को भी दूर किया जा सकता है ।

घोर का क्रलमा

मन्त्र—“या शरवशक्ति जं मे गेरा दलियाज किन्तामकादिल विष्णु मेरे घाम ।”

विधि—कुत्ते के डाले पर राखि के समय एकाल-बाल में लोभान को धुव देवे हुए इस मान्य को अपनी माला पर १०८ बार पढ़ने से दो दिन के भीतर घोर डरावले भावसे घाम का जलर रोग है ।

ISSAUL

१. भूत, प्रेतादि दोष-निवारक प्रयोग

इस प्रकार के प्रयोगों में हिन्दुओं की मान्यता को ही ध्यान में रखा गया है तथा इनके द्वारा किसी को भी दुष्ट को पराजित करने वाले मन्त्र, लोकोक्त तथा शरव-शक्ति के प्रयोग किये जाते हैं ।

इस प्रकार में भूत-देवता, निरक, परी आदि के प्रयोग में भूमिगत कलाके विविध प्रयोगों का विशेष स्थान रहा है । दरवाजे में लगी बालन में, जो हिन्दू तथा मुसलमान दोनों मान्यता में उक्तान्त है । इन दोनों के कुछ मान्यता में 'गुह्यमन्त्र' का मान है, वहीं कुछ का मान्यता में 'या शोष भयो शोरेन दुष्ट को' दल मान्य के साथ हुआ है । कुछ के मान्यता में 'गुह्यमन्त्र' ईश्वरशक्ति का दल मान्य है । परन्तु ये सभी मान्यता प्रभावशाली हैं तथा हिन्दू एवं मुसलमान दोनों द्वारा मान्यता में हैं, जिन उन्हें इस प्रकार में मान्य दिया गया है ।

घरों का प्रयोग करने से पूर्व यह आवश्यक है कि उन्हें किसी कारण से बलवान् पर १०८ बार की माला में काली माली द्वारा लोहे कलम पर 'शरव' शक्ति के द्वारा चिह्न कर दिया जाय । गुह्यमन्त्र मान्यता के अनुसार उक्तान्त में शिव का दल मान्य एवं साधन के निम्न से भी उक्तान्त है, जन्मदुष्ट हो करने करना चाहिए ।

बच्चों के लिए आरामदायक गंदा देने का मन्त्र

मन्त्र—“क्षेत्र जो क्षेत्र मोला दुल आ बली का क्षेत्र, कोरे क्षेत्र, मन्त्रोरे का क्षेत्र, घाघ और विजयि का क्षेत्र, योरी और बुखार का क्षेत्र, जल और गुल का क्षेत्र, दोल और मूद का क्षेत्र, कोरे और धरादे का क्षेत्र, मेरे और विजय का क्षेत्र, मोल पर धामन का क्षेत्र क्षेत्र मेरे क्षेत्र मोला दुल आ बली का क्षेत्र, राह और राह का क्षेत्र, जमीन और जलमान का क्षेत्र, पर और घाघर का

“यं, यत्न और समीक्षा का अर्थ, कला और प्रतिभाशीलता का अर्थ, लौह और फलज का अर्थ, ब्रह्म और मोक्ष के अन्तर्गत सुख का अर्थ।”

फिरि—रौली को एही मे बोले एक ठोरे मे गायकर, हल मान
हवा जहाँ उ सीधे फाँवें तथा सवा बाग भिड़ ई सँकटा मुँह वा सीधे के
मान मे बागों की सीधे से । फिर एही को सीधे की एही देकर रौली-
बाग के बोरे मे सीधे है ।

प्रत्येक वर्ष की पूर्ण वर्षा में अलग-अलग

भूगर्भाद् द्वाप-लनञ्गाद्यु यञञ्

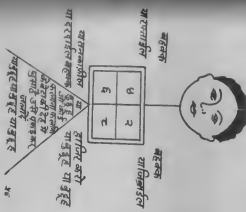
मोक्ष प्रदीपक ग्रन्थ को कर्मात्मा समाप्त होने पर ही प्राप्त होता है।
 इसका लोकोपयोग की भाँति देकर साक्षात्कार के रास्ते में बाधा देने से
 बचाने के लिए लिखा है।

या कट्याईल	२	या निद्राईल
३	१०	७
या दरदाईल	८	या निकको काईल

34

۱	جبرائیل	۲	مکاتیل
۳	۷	۴	۱۰
۵	۶	۸	۹

2



दीपक के सामने लूट तथा मिर्चार्द्र की रखते । अब दीपक धन लक्ष प्राप्त होने लगे की बचती मिर्चार्द्र दीपक की ली पर बजाती के रहे । इस प्रयोग से प्रमाणित हुए जाते हैं ।

१	२	३	४
५	६	७	८
९	१०	११	१२
१३	१४	१५	१६

(अष्टादि योग-विचारक मन्त्र, चन्द्र)

परियों का उल्लेख दूर करने का मंत्र

मन्त्र—“ओम् महेश्वर सुबन्ध विमलम्ब वरी सद्गी में चार कीज नवीन बरदार महेश्वर सुबन्ध विमलम्ब वरी चारपा विचार के लिये प्रजापुत्रीन पुत्रवती सुशोभे में वरी कृपाय सुलैलाज नैक वरी को पुत्रय कीज कीज वरी स्थाव वरी सखत वरी

वरी अर्थात् कुर्सी की लाकड़ी वरी चारपा कीली मंडी जाताना चार कन आय सिता सवा भैर वरी का च्छाया आय भै आर दक्षिण रोना मीर मुदीपुत्रीन सखद्वर अदानी या रील सख अद्विष्टा यदाय दार दक्षिण न हो तो रोना क्खानन के दामनीर हूँगा ।

विधि—मन्त्र की बारह की अक्षरी पढ़ने से लाकर, वरी बाटें का कच्चा चारपा बंधकर, जिस रीति पर परियों का कलन हो, उसे बाँधने पर कड़ा करके, एक बगुनी का चारपा करके मन्त्र से १५ बार हाथों से फिर सब बगुनी को गुँद की गूँद पर रख लाते की बरिचों का कलन पर हो जाता है ।

इस प्रयोग की करने के लिये बाँटे-बाँटे कलन कोलना नहीं चाहिये ।

मन्त्र प्रयोग का गणद्वारा

मन्त्र—“ओम् नमो आदित्य गुरु को लक्ष्मी सौ सुहस्र यदाय च्छाया रीत वीर्य भवैत यदाय पूर वरिच न न वरिच कीचिया बसाल वरिच दीलठ जेपिनी वरिच अद्वयद भवाना वरिच, वरिच, वरिच रे वीकी तुलसी की पूर वरिच वरिच ओम् न वरिच से अक्षरी चारपा की सेवा पर वरिच पर, सेरी भक्ति गुरु की भक्ति कुटी मन्त्र ईश्वरोंका ।”

विधि—नवीन वीर की (नव बरा सखे की) मिर्चार्द्र तथा दीपक की लायने रखकर लायन की कुटी से नव रीति की नदी से निकर एपी तक एक कलना दोर की लायकर, जल मन्त्र की पढ़ते हुए कलने २१ गते लयाने । फिर उसे रीति के नये में बाँध दें । इस गणद्वारा कलन करने से प्रजा-देवर्षि का दीप दूर हो जाता है ।

सुहस्रमन्त्राधिकार का मन्त्र

मन्त्र—“ओम् नमो लाकान्त सुभारत कान्त काका विज काल सुभारत में शोको भ्याया, ईकाय सुभारत आया बारिद आया, सिर के कुल पक्षर आया, भौर की वीकी उडानल आया, आरकी वीकी डैलन आया, और का फिहार रोहरा

आधा, आधा किन्तु भेला जाता, वहीं वहीं किन्तु वहीं, पूरा को वहीं देते को वहीं, देरदान को वहीं, उन्नत गुरु को वहीं को वहीं, बुरा विश्वास को वहीं, विषल कटुता को वहीं, बेमल गोपनी को वहीं, वास्तवीर को वहीं, आकाश को लहरों को वहीं, हाकिमी-शाकिमी को वहीं, बेदक को वहीं, लाल को वहीं, निद्र को वहीं, हार को वहीं, हाट को वहीं, गर्ड-क्या वहीं, गिरने को वहीं, फिर को वहीं, फरारे को वहीं, अन्त को वहीं, प्यारे को वहीं, फिली को वहीं, पीली को वहीं, म्हाद को वहीं, सफ़र को वहीं, लाली को वहीं, वहीं दे वे गुरु जलनी के हनुमानदास जलने नेरे मेरे मकर सी शीर, जा पिनरि जाय सी सी राग नाल आध, उठती मार, पकड़ मार, पाय मार, क्ला पाय, मरिचक हलाय, सीध किलाय, म्हाद वेका पिर कौपा कुते मने देरदानापा।”

विधि किसी व्यक्ति को राज में इस राज्य को १००० की संख्या में उसे तथा मान-महिमा का भोग भोगों को भुक्तियां और शक्ति देना है और सम्मान करने पर भूत-देव, वाक्यी-भाक्यी आदि को न्याय देना है।

आफ्नै दूर करने (दिवायन) का मन्त्र

संज्ञा 'बाहि' सात सार जिण देव वती जण उकार एक साईं दुसरी बाहि फारा निंदे बाहिने मलावार जलवार दावो दस्त रणे जिनाहील, विंदे दस्त रणे मीकाईल, गीठ रणे दशाहील, पेट रणे दहाईल, दस्त पाठदस्त रणे पाठ दईल फेरा सुदमाद निंदे बाहिने जली का रसात बाट मिलकलाह की साईं हराव जाली की चौकी बेठी सुदमाद राखिललाह की दाराई ।'

निधि—इस सत्र का भी आरंभ भूयः कर बाँटी और हाथ निरुपान्त
 भूट की रचना में किया—अन्तर्गत है। अर्थात्, वह भी के आसपास दूर होनी
 है। इस समय भी उपररक्त करने वाली भूट लकीर की अवस्था उल्लेख योग्य है
 किन्तु बायाँ सीने में दृष्ट-संकेत नहीं है। मगल आदि का प्रयोग होने पर
 इस स्थान का उल्लेख करते में संशय दूर हो जाता है।

६ मोहन एवं वशीकरण प्रयोग

मोहन तथा खड्गकर

संश्लेषण— $\text{CO}_2 + \text{H}_2\text{O} \xrightarrow{\text{Chlorophyll}}$
 प्रोटीन, ग्लूकोज तथा वसा अम्ल—इन सभी का उपयोग पौधा
 स्वयं स्वच्छि की अपनी ओर आकर्षण कर, उसके द्वारा इच्छित मात्रा तथा
 की पूर्ति करता है।

आदर्श का जगत् अतीतकाल के प्रयोग प्रायः सभी जगत्-संस्थाओं में मिलता है। ईदुल्लेखीयों के अतीतकाल सुल्लेख-वर्णन की दृष्टि प्रयोगों की समस्त में मिलती है।

प्रत्येक प्रकार के मनुष्य तथा वनोद्वारण समान ही क्षीय प्रमाणित करने का उद्योग किया जा रहा है। इसी के लिए प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही क्षेत्र में ही रहना पड़ेगा, जिसका अर्थ होगा प्रत्येक व्यक्ति को अपने ही क्षेत्र में ही रहना पड़ेगा।

[illegible]

प्रत्येक प्रयोग के सात बेंडा निर्देश दिया गया है, उसी के अनुसार
सातवें कदम के सातवाजा-वायल सातवें होती है।

स्त्री-वशीकरण कारक धन्य-नन्य

निविदा बाहर की पहली आवेदन सूची जारी की को एक और का
वक़्त कर दिया है और कर है और उसे सामान्य माना-गनी देते रहे।
किर उस मरिवात बाते, तब उस दिन किसी एकता उठा बाते बनने में
किसी कर निवर्तनीय किन्तु प्रयोग करें—

सर्वप्रथम पीपी मट्टी से एक नया दीपक बनाकर उसमें तिल का

होना चाहिये, क्योंकि फिर एक खंडित कागज के ऊपर काली स्याही के भी अस्तिमित स्वर मिले—

८	२२	६८	६९
काला कागज	काला कागज	सभी को दोष	सब प्रकार की
२०	६५	१०	३६
काला कागज	काला कागज	काली स्याह	मिलने से सब
६५	१०	६	९९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज
२०	६५	१०	३६
काला कागज	काला कागज	काली स्याह	मिलने से सब
६५	१०	६	९९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज

१	२२	१९	१९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज
२०	६५	१०	३६
काला कागज	काला कागज	काली स्याह	मिलने से सब
६५	१०	६	९९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज
२०	६५	१०	३६
काला कागज	काला कागज	काली स्याह	मिलने से सब
६५	१०	६	९९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज

६४

यह सिद्ध करने का लक्ष्य है कि काला कागज के ऊपर काली स्याही के भी अस्तिमित स्वर मिले—

काला, काला कागज को फिर से काला काला कागज है। फिर काला कागज के ऊपर काली स्याही के भी अस्तिमित स्वर मिले—

काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज
२०	६५	१०	३६
काला कागज	काला कागज	काली स्याह	मिलने से सब
६५	१०	६	९९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज
२०	६५	१०	३६
काला कागज	काला कागज	काली स्याह	मिलने से सब
६५	१०	६	९९
काला कागज	काला कागज	काला कागज	काला कागज

यह सिद्ध करने का लक्ष्य है कि काला कागज के ऊपर काली स्याही के भी अस्तिमित स्वर मिले—

काला, काला कागज को फिर से काला काला कागज है। फिर काला कागज के ऊपर काली स्याही के भी अस्तिमित स्वर मिले—

रहितकार के दिन एक बंजली काना कइकर पकाइ सारें, फिर मांस बिना काज को केसर डाला भीकर पद मिलकर, धूप-दीप देवे के बाद उक्त कइकर के सजे में लीज दे तथा उड़ा दे।

यान में बिना काज केही का मांस तथा उसके फिदा का मांस बिना है, बाकी केही तथा उसके फिदा मांस बिना खाए।

८८

يا حانظ	۳۳۲	۳۳۸	۱۲۱۰
يا حانظ	۳۳۲	۳۳۴	۱۳۴
۹۹	۳۳۷	۳۳۰	۳۳۵
تَبِيْعِيْ ۱۰۴۴ تَبِيْعِيْ ۱۰۴۴	يا حانظ	يا حانظ	يا حانظ

८९

<https://www.abdulaziz.org/abdulaziz.org>

कोरी का पना खाने का प्रयोग

मान — "उदाहरतवस्तुना पकड़ कोरी पर पकाइ भोज भूरा हवाइ भूरा वा कइरावे वा कइरावे।"

प्रयोग बिस्मिल्लाही नहीं बकरा भूरे के फिदा केउकर पद मांस के: ११३ बार पकड़ वहीं की बाज। एक घण्टाई तक बिना दूरी बिपय

वा पाना करे तो दूरी बाजि में किसी दिन साज के बाजवा है कोरी वा छाउ केर मांस हो बाजवा। जो अन्तिम पुद के बाद होना, उनका पना बाही पर कोरी का मांस रखना होना, उठावा—दर बाजों का हवाइ बाज हो बाजवा।

निवाही का मान

श्रीके प्रदर्शित मान को सहेर बाज पर बाजो खाही के निवे बा बाजवा के उतर मान बकरा में निवे और फिदा बाजो की निवाही पकाइ बाज हो उनको बाही भूरा में लीज दे तो निवाही पद बाज मान हो जाता है।

९०

७९	७९	७९
७९	७९	७९
७९	७९	७९

९१

८१	८१	८१
८१	८१	८१
८१	८१	८१

अंक (3)

यदि किसी वस्तु (जैसे किताब, टी.वी.) की लागत ₹ 200 है, तो इसका बिक्रय मूल्य ₹ 250 होना चाहिए। यदि बिक्रय मूल्य ₹ 250 है, तो इसका बिक्रय प्रतिशत क्या होगा?

200	250	250	250
200	250	250	250
200	250	250	250
200	250	250	250

ssau.com/abdi

100	100	100	100
100	100	100	100
100	100	100	100
100	100	100	100

₹ 6

200	250	250	250
200	250	250	250
200	250	250	250
200	250	250	250

₹ 3

200	250	250	250
200	250	250	250
200	250	250	250
200	250	250	250

₹ 6

अंक (4)

यदि किसी वस्तु (जैसे किताब, टी.वी.) की लागत ₹ 200 है, तो इसका बिक्रय मूल्य ₹ 250 होना चाहिए। यदि बिक्रय मूल्य ₹ 250 है, तो इसका बिक्रय प्रतिशत क्या होगा?

८८५

८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५

१३०

८८६

८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६

१३१

अथ (१८)

अथ श्रीमद् भगवद् गीता १३, १४ को अर्थान्तर पर विचार
करिता करावे और विचार से ध्यान करे। विचार का वह अर्थान्तर
को ठीक प्रकार बतावे। इस अर्थान्तर के लिए निम्नलिखित अर्थ
करता है।

८८५

८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५
८८५	८८५	८८५	८८५

१३२

८८६

८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६
८८६	८८६	८८६	८८६

१३३

अथ (२०)

अथ श्रीमद् भगवद् गीता १३, १४ को अर्थान्तर पर विचार
करिता करावे और विचार से ध्यान करे। विचार का वह अर्थान्तर
को ठीक प्रकार बतावे। इस अर्थान्तर के लिए निम्नलिखित अर्थ
करता है।

नाना विधानात् साधनं न भवति । किन्तु यत् साधनम् अस्ति तत् साधनम्
 वाच्यं न भवति न ही न ह्येव साधनम् साधनं न भवति ।

१	२	३
१११	१११	१११
१११	१११	१११
१११	१११	१११
१११	१११	१११
१११	१११	१११

१११

१	२	३
१११	१११	१११
१११	१११	१११
१११	१११	१११
१११	१११	१११
१११	१११	१११

१११

नाना (११)

नाना विधानात् साधनं न भवति । किन्तु यत् साधनम् अस्ति तत् साधनम्
 वाच्यं न भवति न ही न ह्येव साधनम् साधनं न भवति ।

१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११

१११

१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११
१११	१११	१११	१११

१११

नाना (१२)

नाना विधानात् साधनं न भवति । किन्तु यत् साधनम् अस्ति तत् साधनम्
 वाच्यं न भवति न ही न ह्येव साधनम् साधनं न भवति ।

नक्षत्र (३२)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विषय संख्या १४४) को वाचन कर विष्णु (चिह्न) के लक्ष्मी से चलाएँ, और उस पर प्रकाश डालें। फिर जो नक्षत्र के नीचे इस प्रकार चलाएँ कि वाचन की मदद से नक्षत्र प्रकाशित हो सके। इसी नक्षत्र को वाचन कर लक्षणों से पहचानें।

१४४	१४०	१४१	१४२
१४५	१४६	१४७	१४८
१४९	१५०	१५१	१५२
१५३	१५४	१५५	१५६

१४०

नक्षत्र (३३)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विषय संख्या १४५) को विष्णु कर चलाएँ, और जो नक्षत्र के नीचे चलाएँ कि वाचन की मदद से नक्षत्र प्रकाशित हो सके। इसी नक्षत्र को वाचन कर लक्षणों से पहचानें।

१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६

१४६

नक्षत्र (३४)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विषय संख्या १४६) को विष्णु कर चलाएँ, और जो नक्षत्र के नीचे चलाएँ कि वाचन की मदद से नक्षत्र प्रकाशित हो सके। इसी नक्षत्र को वाचन कर लक्षणों से पहचानें।

१४६	१४७	१४८	१४९	१५०
१५१	१५२	१५३	१५४	१५५
१५६	१५७	१५८	१५९	१६०
१६१	१६२	१६३	१६४	१६५

१४७

नक्षत्र (३५)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विषय संख्या १४७) को वाचन कर चलाएँ, और जो नक्षत्र के नीचे चलाएँ कि वाचन की मदद से नक्षत्र प्रकाशित हो सके। इसी नक्षत्र को वाचन कर लक्षणों से पहचानें।

१४७	१४८	१४९	१५०	१५१	१५२
१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८
१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४
१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०

१४८

नक्षत्र (३६)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विषय संख्या १४८) को वाचन कर चलाएँ, और जो नक्षत्र के नीचे चलाएँ कि वाचन की मदद से नक्षत्र प्रकाशित हो सके। इसी नक्षत्र को वाचन कर लक्षणों से पहचानें।

१४८	१४९	१५०	१५१	१५२
१५३	१५४	१५५	१५६	१५७
१५८	१५९	१६०	१६१	१६२
१६३	१६४	१६५	१६६	१६७

१४९

नक्षत्र (३७)

नीचे प्रदर्शित नक्षत्र (विषय संख्या १४९) को वाचन कर चलाएँ, और जो नक्षत्र के नीचे चलाएँ कि वाचन की मदद से नक्षत्र प्रकाशित हो सके। इसी नक्षत्र को वाचन कर लक्षणों से पहचानें।

नीचे प्रदर्शित तालिका (1994-95 और 1995-96) की मापदण्ड पर मिल

कर, जिसके अन्तर्गत की तुलना की जिसने कम होना हो, उसके कारणों को
बता कर ही करीबत हो के जाने, जाल बिखरने जाने, बहुरी नज़ा की
हवा रोके-रोके जाल बहुरी आए।

संयुक्त भाषाशास्त्रम् अथ संस्कृतस्य वृत्तसंज्ञायाः सूत्रम् ॥ १ ॥

529

02	3	99	22
29	62	22	60
92	3	99	22
60	3	62	02

294

LN4

2V	4	77	1V
V7	1V	VV	07
1V	6	17	0V
17	4	1V	0

132

मीने प्रदर्शित नवण (विषय संख्या १७३, १७४) को छोटे लकोरे में

मिखाइल मरुत या कर्मिनाम में उपन करने के लिए दो बाली कालीन
 बालाव कलना मरुत है, उनमें बालन में कुमना पैदा हो मरुतों है ।

ISSN 0007-1226/05/0014-0000\$7.50/0

संस्कृत-विद्या-प्रकाश-१

30	70	20	70
70	20	70	20
20	70	70	20
70	20	20	70

893

10	12	14	16	18
20	22	24	26	28
30	32	34	36	38
40	42	44	46	48
50	52	54	56	58

156

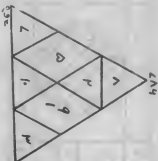
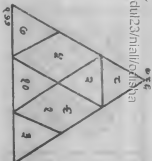
गणक (५५)

श्रीशुद्धिपत्र गणक (शुद्धिपत्र १२०, १२१) को कानून पर लिख
कर, कानून को कानून के शीर्ष, कानून को कानून को लिख।
गणक लिखने के लिये 'शुद्धिपत्र' का कानून को कानून को लिख।
कानून को कानून पर लिख, कानून को कानून को लिख।



गणक (५६)

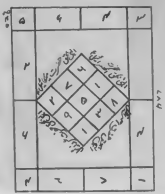
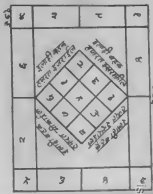
श्रीशुद्धिपत्र गणक (शुद्धिपत्र १२०, १२१) को कानून को लिख
कर, कानून को कानून के शीर्ष, कानून को कानून को लिख।
गणक लिखने के लिये 'शुद्धिपत्र' का कानून को कानून को लिख।
कानून को कानून पर लिख, कानून को कानून को लिख।



issuu.com/abdu123/mali/online

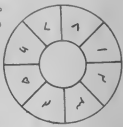
नक्षत्र (४३)

जीने प्रदर्शित करने (पूरा संख्या १०, १००) जीने की मात्रा (संख्या) के विचार, जीने की वृत्तियों में बार बार, वृत्तियों में बार बार वृत्तियों में बार बार है।



नक्षत्र (४८)

जीने प्रदर्शित करने (पूरा संख्या १०१, १०२) जीने की मात्रा (संख्या) के विचार, जीने की वृत्तियों में बार बार, वृत्तियों में बार बार वृत्तियों में बार बार है।



नक्षत्र (४९)

जीने प्रदर्शित करने (पूरा संख्या १०३, १०४) जीने की मात्रा (संख्या) के विचार, जीने की वृत्तियों में बार बार, वृत्तियों में बार बार वृत्तियों में बार बार है।

८८५

५	८	१
१	८	१
१	१	१

२०६

निराश्रितों के लिए इसे विचार करने के लिए '१८' वाले सेवा-कारों को देखें।

नमस्ते (११)

नीचे प्रदर्शित नमूना (विना संख्या २०५, २०६) बताते हैं कि वे कौन से नमूने हैं जो नमस्ते के अंतर्गत आते हैं, और वे कौन से नमस्ते के अंतर्गत आते हैं।

नमस्ते का नमूना है—

८८६

८६	८६	८६
८०	८२	८४
८४	८६	८८

२०७

८८५

११	१५	८९
१०	११	११
१०	१२	११

२०८

नमस्ते (१२)

नीचे प्रदर्शित नमूना (विना संख्या २०६, २०७) बताते हैं कि वे कौन से नमूने हैं जो नमस्ते के अंतर्गत आते हैं, और वे कौन से नमस्ते के अंतर्गत आते हैं।

८८६

२०५	२१०	२०३
२०५	२०६	२०८
२०६	२०७	२०९

२०६

८८५

१०६	११०	११५
१०७	१०५	१०८
१०९	१०७	१०८

२१०

सर्वविध काम में सुख करने की योग्यता पर निर्भर करने वाले की प्रशंसा की जाती है।

अथ (६३)

श्रीमान सर्वविध काम (विशेषकर २११, २१२) के लिये योग्यता पर निर्भर करने वाले पर निर्भर करने वाले की प्रशंसा की जाती है।

८८६

२३३	२३८	२३९
२३२	२३४	२३६
२३७	२३०	२३५

२३१

८८५

२३३	२३८	२३९
२३२	२३४	२३६
२३७	२३०	२३५

२३२

अथ (६४)

श्रीमान सर्वविध काम (विशेषकर २११, २१२) के लिये योग्यता पर निर्भर करने वाले की प्रशंसा की जाती है।

श्रीमान सर्वविध काम (विशेषकर २११, २१२) के लिये योग्यता पर निर्भर करने वाले की प्रशंसा की जाती है।

श्रीमान सर्वविध काम (विशेषकर २११, २१२) के लिये योग्यता पर निर्भर करने वाले की प्रशंसा की जाती है।

८८६

२३३	२३८	२३९
२३२	२३४	२३६
२३७	२३०	२३५

२३१

८८५

२३३	२३८	२३९
२३२	२३४	२३६
२३७	२३०	२३५

२३२

अथ (६५)

श्रीमान सर्वविध काम (विशेषकर २११, २१२) के लिये योग्यता पर निर्भर करने वाले की प्रशंसा की जाती है।

अत्रान्नं दत्तं भवति -

८८५

१०५	१०१	१०१
१०५	१०८	१०९
१००	१०१	१०५

२१२

८८६

३८६	४०४	४८६
३८५	३८६	३८६
४००	३८६	३८६

२१६

अत्रान्नं (६६)

अत्रान्नं दत्तं भवति (१०५, १०८, १०९) इत्येताः 'श्रीमान्' को भवति

अत्रान्नं दत्तं भवति (१०५, १०८, १०९) इत्येताः 'श्रीमान्' को भवति

अत्रान्नं दत्तं भवति -

८८६

१०५	१०१	१०१
१०५	१०८	१०९
१००	१०१	१०५

२१२

८८५

१०५	१०१	१०१
१०५	१०८	१०९
१००	१०१	१०५

२१६

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (४)

प्रयोग—“यह दीपन का घान, चढ़ाई में दाँटा बसालीक लेजान केरी हकीम केरी धरत वन फलानी की जा रानी, जो न पढ़ा हो बोरी की नाद पवार की साज डलाल की माटी बहू, राजा चाहे राजा का, में चाहे अपने राज के, भेरा काम अउरान को जाननी में तेरा दामनीर रहैया।”

विवि—जिहरी की बलिदार में भाराव कर के री बिलो तक, गाल दात के लयन लता हिलत १३ राई के बाहे हल में निकर, जलक दात के करत वलन मान के। भाराव-भारत बाद पड़कर भाग में शानता भाग भल में जिल बाहिर पर फलानी काद जाता है, यहाँ साधन-स्त्री के गाल का उज्जवाळ करता चाहुँर।

उक्त विचार की निरन्तर-निरन्तर कर के कर के यहाँ पर साधन-स्त्री को भूँर होकर राजने का उपनिवेश होली है।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (५)

प्रयोग (१)—“बलक भुठ गुज्जर रसमान, जामा जामा है बलवारीन होइन साज भार फलानी की जा रानी, न राते हो केरी माँ की ललक, बहिन की चीन ललक।”

प्रयोग (२)—“बलक बलौर एक रसमान, सुन होइन केरी साज बन फलानी की जा रानी, न राते हो केरी माँ बहिन की चीन ललक।”

उक्त दोनों बलनों की प्रयोग-विधि नीचे लिखे अनुसार एक केरी हो है। एकदा भलनी में यहाँ फलानी काद जाता है, यहाँ साधन-स्त्री के गाल का उज्जवाळ करता चाहुँर।

विवि—बेवन का एक गुज्जर दीपक अनाकर जलके चारों कोनों पर चोटे का दात (दान) ठेका भरने बस होइन की बलवारीन (बलौरी) कीनी का रसाल (रस) भागकर, जलनी ठेका पवार भार बलिगता रखने। फिर बने (निकला) होकर, बलिगता (बलनी की बोर भूँर पर बैठ जात ठेका दीपक की बलिगी बलकर, लोभान की धुप में। लोभ के लिए, भूने ठेके की बल

गाल रखने, फिर उक्त दोनों बलनों में से किसी की एक को १८८ बार धार कर लेने की नीति तथा दीपक की बलता हल होइ है। इस विधि की विधि ७ दिनों तक करते यहाँ से साधन-स्त्री बलीगता होकर स्वयं विचार के चानी पर जा मिली है।

स्त्री-वशीकरण प्रयोग (६)

प्रयोग (१)—“यह दीपन का घान, चढ़ाई में दाँटा बसालीक लेजान केरी हकीम केरी धरत वन फलानी की जा रानी, जो न पढ़ा हो बोरी की नाद पवार की साज डलाल की माटी बहू, राजा चाहे राजा का, में चाहे अपने राज के, भेरा काम अउरान को जाननी में तेरा दामनीर रहैया।”

विवि—जिहरी की बलिदार में भाराव कर के री बिलो तक, गाल दात के लयन लता हिलत १३ राई के बाहे हल में निकर, जलक दात के करत वलन मान के। भाराव-भारत बाद पड़कर भाग में शानता भाग भल में जिल बाहिर पर फलानी काद जाता है, यहाँ साधन-स्त्री के गाल का उज्जवाळ करता चाहुँर।

उक्त विचार की निरन्तर-निरन्तर कर के कर के यहाँ पर साधन-स्त्री को भूँर होकर राजने का उपनिवेश होली है।

प्रयोग विधि—निम्न हो जाने पर जलान के लयन उक्त भाग के, धार गुज्जर की जलन पर चढ़े नरा उक्त धार में रखकर बाहिरीयद बलिगता की विचार है जो बलिगता का की भुलि होजो है। यह भलन बाहिरीयद बलक होजे के लयन-भार बलिगता-ललक भी है। तथा भूँर को बलने बलने का काम की करता है।

स्त्री-जन-मोहरन प्रयोग

प्रयोग—“कावन्देन कावन्देन देरी चढ़ाई बने दुरावदक बोरी, रसाल होनी ने चोरे चोरे, ठुल उठार लोभा बलता। एक ठुल दस, दूका रिहोते, तोजे ठुल में लोटा-बरा नादारीयद बने। को दूजे दल ठुल की बाता, सा चाहे बलारे बल। और के पाव बाव को रिवा कादि बरि भाव। भेरे माँक भुठ की चाँक फो बलन देरियोभावा।”

विनि-रविशर के दिन स्नान करने लगे। गुजराती नाम गुल मिठाई है, दीपक बाला, १०८ मुनीं बाल गुली) की की से लाकर गोबर के १०८ बार उल्ल मंत्र से कर्मसिद्धि कर बाल से होम करे। इस प्रकार २१ दिन तक निरवार होम करने से माल सिद्ध होगी है। वल बलि में बाण्डरों के पत्राणि बाण्डिए। २२वें दिन साढ़े की) बलिज करारक बलिजा देनी बाण्डिए।

सायनाका के समय किसी मुनीं बाण्ड गुल को एक साथ ले ले मुनीं बाण्डमणिज करने दिन रविशर की मुनीं बलि बाण्डा, यही मणिज की बाण्डा।

रञ्जि-सोहिल चरपा दूध मन्त्र

मन्त्र—“कामदेवस हामाख्या देवी बरौ बसो इस्पदल गोपी, इस्पदल गोपी ने सगाई बारी, हुल जुनीकी चमारी, एक हुल राता, कृता हुल गाता, एकहुल हैला, दुता हुल बिहैला, वही बसो देवा का पुत्र, देवता के पूर में रहे काला देव, भूत जेन मे सरे, नलान, ये जावे, कितने काम ये जावे दीना टामने के काम, मेरे काला मेरे को सारे सुख नोष देनी हो तो बेसी लाभ, वही हो तो उठा लाभ, यह सोहे राजा के यह लो, प्रता के सदल, मुझसे होनी राजी, हुल दूँ उनी के साथ, यह उठ लावे मेरे लाभ, इनको बाण्ड पर पर लाभ, छाठी काटि धी मर जाय, मेरी बलि गुरु की मणिज फुरोमन्त्र देवरोपाया चूक उच्चार सबे लोना बाण्डो वही बाणी के हुल में परे, बाया होइ कुलावा जाय तो मार खबार में परे।”

विनि—अगिरात से दिन चरपा के देव को नवीन कर कसरी सानी में लाभ वलाह का दोष बाण्ड भावें। रविशर के दिन जातः काल उनी सानी को, उल्ल माल से उ बाण्ड बाण्डमणिज कर उपा गुलन की मुनीं पूर पूर केर, दोकर पर ले जावे। फिर बार लाकर पात से सयन टाली के बाण्ड दीपक रत्नकर मेरुव का दुधमन करे उपा दे। बार भजल का ल

करे। बाण्ड में सगाव, उठे के बरे, ठैल, मुल तथा बही रवळ। एल भगार निज दे। किसी एक काम करने से माल सिद्ध हो जाता है।

बाण्ड सिद्ध हो जावे पर आनन्दित करने के समय बाण्ड के पुन की दस माल से उ बाण्ड बलिमणिज करके, निज लो की मुँ बाया बाण्डा, बही मणिज होकर काम में लगे रहै।

वीर विरद्वान का मन्त्र

मन्त्र—“वीर विरद्वान गुल करे सगा भे सगा लोना खाय बसरी कोम धारा करे साव से कुनक आगे चले, मास से कुनक पाव चले, बलन से पूरी चले, बावन से दीर चले जिसमें मर मजना का दीर चले भीर की मजा उलाहल चले, अवरी मजा डेकल चले, सोल की मजाला चले, दैठ की उठला चले, रावो में दचकरी मेरे देरी में वेरी मेरे इजाल माटी दैठ करे गुदारा माटी पाठ करे कलशन नही के मार करे ठः ठः ठः।”

विनि-किसी बहुत की रात में सुके करके रोजाना ५० दिनों तक इस मन्त्र का निज १०८ बार बार करे तथा गुपुंमन्त्र तीन का दीपक जला कर चलेने के पुन चढ़ावे पर सगा भेर दण्डा का कोन रखके की कानोउदे दिन दीर निरद्वान काम होकर होगा। जो देकर दाना मही बाण्डिए। जल वरते नही तो फिर यह दीर होला जिकरन में बाण्डर, वही कला प्रता जलने दिन काम के निज कला बाण्डा, उसे बाण्ड गुल करता रहे।

सुदुस्मदा पीर का मन्त्र

मन्त्र—“विसिक्कलदेइसामिठी दीय पीर वैषमा फोट जंवेर जिस पर लेले सुदुस्मदा पीर, सदा मर का दीर जिस पर लेलेला बावे सुदुस्मदा पीर, मार मार करता जावे, बावे बावे करता जावे, बाकिनी को साथ हुआ बावनी से छापी, सोनी की छापी, दीसली को साथो, एकली को लगो, जलद जावे इजाल द्यमान दुधोन की बाण से निकल कर लावे, दीरी काला के द्यमान वू कोलका साथे नही तो माला का चूला दूध दयाव करे।”

विह्वल—इस मन्त्र को लीपरी, गुप्तराज की सखा से बचना चाहना।
 कहे किन्तु १- रात्र परकृत लज्जान की पूर देके बला । इत मन्त्र २- १
 गुप्तराज की अने परकृत गुप्तराज की शक्ति देना है तथा बलको को काज
 करने को बला बनाते हैं, जो गुप्तराज करता है ।

इत मन्त्र को यदि किसी क्षीयार आदमी के ऊपर पढ़कर पूँज पायी
 पाय तो उसे क्षीयार मिलता है ।

मुहम्मद पीर का हाजिरानी मन्त्र

मन्त्र—‘विमिसलाहूँ रेहायानिर्दीम मुहम्मद ग़ादरगिल्ला
 रनललल्ला जीका असवार पादी चलता बीन कीन पासवा,
 ज़कीरिद का पर्वत चले, शमी चले, गाडी चले, टोली गांज
 मेरी बाजल अहेमदा चलन, महेमदा चलन, सपर मिशा चलन,
 बाहर वलम चलन एक लाज जर्मी इज्जत पीर पैरकर चलन,
 वासन दीर चलन, बीसद जोमनी चलन, नौ नारासिद चलन, बाद
 राख चलन बीसद यूसा चलन, मुलमान पैरकर का नसन चलन,
 लाकली चली, सुपेद परी चली, अरद परी चली, स्थान परी चली,
 सख परी चली, दूर परी चली, दूर परी चली, अशोल परी चली,
 जालमान परी चली, जालका मे उठरी बराय खुदा मेरे बाम हूँ

मिसली उठारल्लाबादक चलता, एक ही चल्ला दीय चलन दीय
 सी बाया तीन चलता, तीन सी चल्ला बड़े पैरा बूँ चलाय उठा
 गुवादेय चल्ला मेशक कसिहरी चली लका दे राख चल्ला इकुन
 चले पूसन गार्दे देरी पूरा चली नदी नालिसे चली मन्थोरी
 राखनेरी दे चली उलटी बाकर सुकरी लागी, जो कोई बड़े
 दमारी पूरी उठरी सोमली देवू केवल मन्त्र मेरी जाकि
 विमिसलाहूँ रेहायानिर्दीम उतर का बाला बला उतर का बाद,
 शाद ज़ाय, परिचय का बाजा बला परिचय बादशाद बा,
 दूर का बाजा बला, दूर का बादशाद ज़ाय बलो कले के
 असवार अरवी अरवी ज़ाय मिलली लेक बादशाद बर्दा इकाही

गरी हाजिर रहेना है खुदा मुहम्मद की सुखीर पीर नीर लीला
 बोवा, नीला बीन जिस पर चलि ज़ाय मुहम्मद पीर गंजा करे
 निजल गुमारे ज़ाय पावो के कले न बाने, खाल लज्ज अलज्ज फा
 हरे सो गुलवान विह्वल में ज़ाय, सवा सन लोह की नीर
 खेरी, गाँव पावो ज़ाय राख इदारी बली अजीर पैसी बरी
 गुना है हिस्सेगी-अमी। भिलो-किसे मेरी, फाई गुदरा तीर
 दाल, दमारी इकर गुदारी गुदर फिले नारासिद फिले की
 बारी ४: ४: सारा ।

विमि—सवा दीय लोह कयवा, गुलल लला लोमान की पूर की
 बाय । फिर सवा पीर बायल की बरिहद बलाकर, काली में काली बरकर
 दल । अहिन्द के ऊपर बोमुल दिला जलाने । फिर काली काल की
 स्थान कला के लवा बले काले पहिरा कर उसे सामने लोहाने तथा गुन
 की सोली को गुलल मन्त्र मे २४ बार लज्जमन्त्र कर लया की लिलाली ।
 फिर काला दीयक के ऊपर हिन्द जमाने । गुदरान चलने को गुन गुना
 बापाय, असवार बड़े लोह-काली उतर हैनी ।

हाजिरान का सुलेमानि मन्त्र

मन्त्र—‘विमिसलाहूँ रेहायानिर्दीम खुराई बरा दू बरा
 वैजरीन पैरकर दूनी मेरी सादाय फूरी वादना गुदरी देवुनियादी
 दुर्कमपरी हायिपा मिलार देवूँ देरी सकि मेमि बाँसि खलार
 नौ नारासिद बीसली कलवा बारा भका भकाभर सी ज़ाकिनी
 कलम दुरामन लल हिद भूत जेव कोर बाकर ज़ायिपा केवल
 वेमि बाँसि लाव जो न बाँसि लाई सी दुराई सुलेमान
 पैरकर की ॥’

विमि—दूर गुदरान लो लेल, दूर, नील, पूर तथा मिलाल से गुलल
 करके १-२८ बार चले से बड़े मन्त्र २४ निम में लिद हो बागा है २ भव के
 लिद हो बागे पर सब हाजिरान करता हो, सब जेव पर सिद्धी से बीना
 जलाकर, जल पर बरबली की मजिदर जमाने । फिर एक लकड़ी के पट्टे

मारासकला के समान लम्बे की मोर ५ भार मजल पककर हुँक मार देने से जलकी दीप्त कर दे। जलकी से बचाव नष्ट भवितुक नहीं दीप्त पाता ।

दण्ड के दर्द का मन्त्र

मन्त्र—“मनो कामरु देव कामका देवी नर्तरी वसि दम्भादल जोगी । दम्भादल जोगी ने वाली भाव, निव उठ वसे जारन, *ASAM* भाव । वस में वसि दम्भादल, भाव भाव वी के मोरर किया, भाव निवदमा कीपा साव । हल गुलावा दूध गुलावा, मर घोला हूँ काला । बाप दधि मालि मधुना दीपा कूँ हो मुक्त मोररभावा की दुहाई छिदे । फलद साँपा भवद कावा कुरो मन्द ईशरो बापा ।”

बलि—एत मन्त्र का जन्मादल करदे हुए लोहे की दीप्त काली की काठ (लकड़ी) पर ठोक देने से बाप का दर्द दूर हो जाता है ।

बायले कुत्ते के काटने का मन्त्र

मन्त्र—“नयो कामरु देव कामाशा देवी नर्तरी वसि दम्भादल जोगी । दम्भादल जोगी ने वाली कृपा दल काली दल काटरी दल दीली दल साव । रंग त्रिकोटी दल नर्तरी दल दीको दे साव । दलका निव द्दुग्धनव दूरी राधा वरे मुक्त मोररभावा । सत्य मन्त्र आदये मुक्त को ।”

बलि—एत मन्त्र बल की दधि में १००० बार बजवा बाणिए । वस के लज्जत दीप्त का दोरक जगाना बाणिए तथा बलकुली का योग लज्जता बाणिए । दल बहार मन्त्र निव हो जाता है ।

मन्त्र के निव हो जाने पर निव जादगी की बायले कुत्ते ने काट दे, जलके बाव के जलकी मोरर भावकी की राव की ७ भार मजल पककर लमा दे । दल निव हो दीप्त निव दल निव करने से लाम होता है ।

बायले कुत्ते का भोग

बलि किसी व्यक्ति की बायले (पारवा) कुत्ते ने काट लिया हो तो निम्नलिखित मन्त्र का साव देने से जलका निव उठर जाता है ।

मन्त्र—“शेष कामरु देव कामाका देवी नर्तरी वसि दम्भादल जोगी, कामरा कुपा सोला की बाप कपा का हूँ । बन्दर नावे दीप्त बहार साँपा देवी मोरर नाँव दण्ड का निव मोरर फलद साँपा निव कावा कुरो मन्द ईशरो बापा ।”

COPIED FROM THE बलि—एत मन्त्र के निव दम्भादल जोगी ने वाली भाव, निव उठ वसे जारन, *ASAM* भाव । वस में वसि दम्भादल, भाव भाव वी के मोरर किया, भाव निवदमा कीपा साव । हल गुलावा दूध गुलावा, मर घोला हूँ काला । बाप दधि मालि मधुना दीपा कूँ हो मुक्त मोररभावा की दुहाई छिदे । फलद साँपा भवद कावा कुरो मन्द ईशरो बापा ।

आशासीनी का भोग

बलि किसी व्यक्ति के जाने फिर से सुनिवृत्त से सुनिवृत्त लव होने वाला आशासीनी का दर्द हो तो नीचे लिख मन्त्र का साव देने से दर्द बन्द हो जाता है ।

मन्त्र—“काली विदुषा किलकिनी, काले बलकल लाद ।

खड़े हुरम्भद छाद जंक दे, आशासीनी नाद ।”

बलि—एत मन्त्र के निव दीप्तना पा दीली की राव की १००० की लकड़ा में वस कर मन्त्र को निव कर दे । फिर भविष्य पर पदबहार की दीप्त पर बाव मोरर के लज्जत रोगी की लूँ की मोरर दण्डकी लज्जता दीप्त की बाव कर दे तथा मन्त्र दल मन्त्र की १०० बार, पककर उल पद हुँके मार दे तो आशासीनी का दर्द दूर हो जायेगा ।

बायसीर का मन्त्र (१)

मन्त्र—“दीपा दीपा कौब कल कौर के सोला अलिक भावर बाले नर्तरी कौरी खूनी बादी पञ्च न दीरे । दुहाई लख लुखीसाव बादराद की ।”

बलि—एत मन्त्र किसी बल के लज्जत होले मकवा दीपानी की दाव में १००० की लकड़ा में वसने से निव हो जाता है ।

मन्त्र के निव हो जाने पर, काली मन्त्र ने दीप्त बाव बलनिवृत्त पाकी रोगी की बायल मोरर के निव दे तथा बाव से रोगी बायल के बाव मोरर, बलनीर के बलने की लव से पकककर मज्ज जाय भविष्यज

में बसाये और कलकल धारे । इस बालक को कुछ मलय बाली ने उस के दिल को हिलाने से बचाये के बलीन से भीतर तक ही हूँ पोते निकाले से बचती है ।

(१) कुछ विधि, मलय और बार / विना से बाली बार के रूप की चीज कर पसल बना उसके पीछे को दोनो बाली से लबाये को बलीन में चढ़ा हुआ बाल निकाले से बचता है ।

दीठ-मूठ से सुषा

हृदिकार मलय के कोड़े की टोरी बलबाबर हाथ से बालक करने के दीठ-मूठ से सुषा होती है ।

विमल

१० वशीकरण सम्बन्धी कतिपय अन्य प्रयोग

इस प्रकार के वशी-वशीकरण सम्बन्धी उपाय सम्बन्धितों का उल्लेख हिन्दू, बौद्ध, सिद्ध, तथा मुसलमान दोनों ही साधक ग्रन्थों में मिले हैं । वे हिन्दू, बौद्ध, सिद्ध, तथा मुसलमान दोनों ही साधक ग्रन्थों में मिले हैं । वे हिन्दू, बौद्ध, सिद्ध, तथा मुसलमान दोनों ही साधक ग्रन्थों में मिले हैं ।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (१)

मन्त्र—“पुत्री पुत्रवती पुत्रीयाया वरधेवरी पुत्री बन्तरी
ये ये कार मन मन लीज मेरे भयंकी छाती कार कार मे न हटे देवा
वरधार मेरे हो प्रसात लेटे, दीन हो वीर लोटे बाबा बाब हरी
होई हो जगज ह्यास साजा पुत्रवती मेरी शक्ति मेरी शक्ति कुनो
मन्त्र देवरी बाबा ॐ: ॐ: ॐ: स्मार्ता ।”

विधि—वरधार के मन को बावरी बार हो वरधरी लीन मुष्टी
रगल लाकर बाजाल से मुँह करके ७ दिनों तक लगातार १५४ बार वरध
मन्त्र का जप करना चाहिए । जब मन्त्रों समाप्त करवा बाब की राख के
ऊपर फिराव बलाकर रक्ता बाहिर और उसके सामने पुष्प-फल बरीह
रखने चाहिए ।

जब मन्त्र फिर हो बाब को फिराव के लीज वरधरी मुँह राख को
लीकी से बाहर रखने । फिर निम १ गी. को बाब से करवा ली. उनके
ऊपर राख को २५ बार बाजालिब करके बाब दे, लो हूँ साब-साब ली
बली जाती है ।

वृद्धादि-वृद्धों के बहुतारा यह मन्त्र बहुत जलर काक है । इसके
प्रकार की वरीका करने हो ली बाजालिब राख मिली लेन के ऊपर
बाजालिब बना चाहिए । बाजालिब राख के पानी हो सेव राख बाजने
बाजे के साब बल होती ।

स्त्री-वशीकरण मन्त्र (२)

मन्त्र—“पुत्री पुत्री भवत पुत्रवती पर माते पुत्री फिरे
दिवाली घर घर बाहर लहे ठाढ़ा भरवार लगे देवी एक सती

विधि हमारी विधि को गरीब के समान १०० बार कर देने में काम मिले हो जाता है। दूसरे मन्त्र में 'वहो' 'अगुकी' शब्द आया है। वही मन्त्र-मन्त्री के नाम का उच्चारण करता था। विधि में 'मन्त्र के बिना ही जाते पर एक क्षण के पुन का तीन बार मन्त्र में अनिवारित करने के तीन लीप के साथ में दे दिया आया। अथवा जिसके मन्त्रक पर काम दिया जाता। यह तीन वृत्त मन्त्रक की सेवा करता है। दो की वही वृत्त पर एक क्षण को चलाने पर मन्त्रक के वही पुन हो जाती है।"

स्त्री-नशीकराण मन्त्र (७)

मन्त्र—“पूजयुक्त तू पूज की राती जगमोहनी तुम मोर वाली,
जब मैं पूजा जान पड़ू, तब पावनी परदास, फुली पड़ू तू अगुकी
बेगी, जो जगती जाती, उमंग, उमङ्गा मन लावे निकार हमारी
बरपता करे स्वीकार।"

विधि—होली के दिन यह मन्त्र १०० बार करने में मिले हो जाता है। मन्त्र में 'वहो' 'अगुकी' शब्द आया है। वही मन्त्र-मन्त्री के नाम का उच्चारण करता था। विधि में 'मन्त्र के बिना ही जाते पर एक क्षण के पुन का तीन बार मन्त्र में अनिवारित करने के तीन लीप के साथ में दे दिया आया। अथवा जिसके मन्त्रक पर काम दिया जाता। यह तीन वृत्त मन्त्रक की सेवा करता है। दो की वही वृत्त पर एक क्षण को चलाने पर मन्त्रक के वही पुन हो जाती है।"

स्त्री-नशीकराण मन्त्र (८)

मन्त्र—“नमो गुरु गुरु दे तू गुरु-गुरु तामरा मगान के कि
कला वा उलका देल उता सब हूँ हमारी। जस जसम को देखे
कले बली हमको देखे कल-रक्त यजे थात-थात दे काजिका के दूठ
जोभी जगल और अवधुत सोही दाय अयाय लाव देही हो
उदाय लाव न सोने तो माता काजिका की गुप्या पर वीर
परी। शब्द लीप विद काय। फुली मन्त्र देवरोलाया सत्य नाम
जदेया गुरु का।"

विधि—हमारे के दिन एक वीरन बार पुन की लेकर मगान में
जाते वही होल मगान में करे। का गुनन करने बाद मन्त्र का १००० की
संख्या में मन्त्र करे दो गुरु मिले हो जायेगा। उत गुरु को जिस मन्त्र-मन्त्री
को मिलना जायेगा, वह मन्त्र पुन हो जायेगा।

स्त्री-नशीकराण मन्त्र (९)

मन्त्र—“नमो उर्वरी दुपारी काम निपारी गाना पर काम खरी
विपारी मन्त्र परी खलाह तोहि दिया कलका लोहि तोहि जीवना
पाठ पनवरी पूरा सब ममान को बच न होय हो जरी दुखमन्द
की जान। कल्ल लीप विद काय फुली मन्त्र देवरोलाया सत्य नाम
जदेया गुरु का।"

विधि—हमारे के दिन एक वीरन बार पुन की लेकर मगान में
जाते वही होल मगान में करे। का गुनन करने बाद मन्त्र का १००० की
संख्या में मन्त्र करे दो गुरु मिले हो जायेगा। उत गुरु को जिस मन्त्र-मन्त्री
को मिलना जायेगा, वह मन्त्र पुन हो जायेगा।

स्त्री-नशीकराण मन्त्र (१०)

मन्त्र—“नमो जल की गोविनी पाताल नाम जिस पर मेहूँ
सिलके लोता, सोने न पावे सुख से कलन पावे, सुख से पुन
किर-किर लके देरा सुख, तो काँधी बूँट तो थावा नरसिंह की
जटा दूँट।"

विधि—हमारे लोनों को एक पत्ती में लोटे कर गुनन की फुली है।
किर जने होले में देवाकर किसी कामना के पानी में लोता मारकर सोख
कार मन्त्र पढ़ें। किर में दे पत्ता निवालाकर, उत सोख कार मन्त्र पढ़
कर गुनन की फुली है। उत पत्ता लोत लोत को जिस लोती को निवाले,
वह लोत हो जायेगा।

स्त्री-नशीकराण मन्त्र (११)

मन्त्र—“नमो काम देवे कामना देवी जरी सरे हमारा
लोपी, हमारा लोपी ने दिसे बार लोप, एक तीन निवासिनी,
दुसरी लोप दिखावे राणी, तीसरी लोप न होलाय, लोपी लोप
मिलन कराय, नही सारे हो हुआ बावड़ी घट दिने, देही हुआ
बावड़ी लटक सरे। नमो गुरु की जलका फुली मन्त्र देवरोला
यावा।"

विधि—हमारे लोप पर धातु पढ़ रहा हो। उत काम-
ना लोप निवासिनी में रखकर लोप में एक बाहुला लोपक जलकर निवासि-

सामान-मनस्य मृत्युः की मृतौ हेतव्यं दृश्यते । तस्मिन् साधनप्रकारेण के समय निश्चयस्ती के बलीपुत्र कथा हो, उसके भीतर पर पाठ सारा दे हो वह बली-पुत्र हीतर प्राप्त होती आतीही और वह उसके भीतर पर श्रीमत् सिद्धी सागरी आतीही, इस सब हीतर कहें बालीयानी आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (८)

रविवार के दिन मृत्यु साधन की बलिही रात में जो मटरी साने भोजन लेना चाहें, वह रात ही, उसके रातों के बीच की मृत्ति कुट्टी कर के साने । फिर ज्ञानों और की बीट दृष्टान्त और मृत्तुवा निम्नकार एक हीन के बलिपुत्र कहें । निम्नकार सन्ध्या के समय निम्न रात के बलिपुत्र पर वह निम्नकार आतीही, वह मटरीपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (९)

मनसवार या रविवार के दिन एक बीट में किसी छुईकर की बार कर जल बीटों पर गाढ़ दे । सातवें दिन उसे जलावे । उस समय जो एक दृष्टी आने लगे, उसे पकड़ लेना उसके बलिपुत्र एक मृत्यु दृष्टी की की, जो जन्म स्थान पर ही निम्न रात ही निम्न पर बीट बांधे । सही बीटों रविवार की मृत्यु की मृत्ति देकर दृश्यते । फिर साधनकार के समय जो दृष्टी आती है, उसे निम्न साधन-मृत्ति के भीतर के साने साधन पर वह मटरीपुत्र ही आतीही तथा सब इनके भीतर से कुट्टी दृष्टी का साने कराना साधन सब वह मृत्यु दृष्ट आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१०)

सुख भवना अथवा लक्षण में मृत्तु की दृष्टी प्राप्त हो तथा मरे की बीट की लक्षण निम्नकार बीट में फिर उसकी छुट्टी छुट्टी निम्नकार साधन पर दृश्यते । साधनकार के समय उसके से एक मृत्ति का कुट्टी निम्न रात की दिना साधन, वह मटरीपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (११)

कारवालीकी, बार, पुण्ड्रा और छोटी कथाका—एक सको मन-साग निम्न मटरीपुत्र पर मृत्ति साधन पर दृश्यते । साधनकार के समय उस मृत्ति की लक्षण निम्नकार बीट में फिर उसकी छुट्टी छुट्टी निम्नकार साधन पर दृश्यते । साधनकार के समय उसके से एक मृत्ति का कुट्टी निम्न रात की दिना साधन, वह मटरीपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१२)

बीट का निम्न और बीट का एक साधन एक मृत्तुपुत्र—एक मृत्तुपुत्र निम्नकार मृत्तु मृत्तुपुत्र बीट में । उसके से एक मृत्तु की पर मृत्ति निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१३)

रघुपुत्र मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१४)

रातों के निम्न की दृष्टी की मृत्तुपुत्र के साधन में एक रात, निम्न के साने में दृष्टी की दृष्टी की दृष्टी निम्नकार में एक रात के निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१५)

रातों के निम्न की दृष्टी की मृत्तुपुत्र के साधन में एक रात, निम्न के साने में दृष्टी की दृष्टी की दृष्टी निम्नकार में एक रात के निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१६)

रातों के निम्न की दृष्टी की मृत्तुपुत्र के साधन में एक रात, निम्न के साने में दृष्टी की दृष्टी की दृष्टी निम्नकार में एक रात के निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही ।

रघु-वशीकरण सन्ध्या (१७)

रातों के निम्न की दृष्टी की मृत्तुपुत्र के साधन में एक रात, निम्न के साने में दृष्टी की दृष्टी की दृष्टी निम्नकार में एक रात के निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही । निम्नकार सन्ध्या—एक रातों की साधन निम्न मृत्तुपुत्र ही आतीही ।

